साप्ताहिक
Live not just breaTHE

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

दि कार्मिक पोस्ट

वर्ष : 4, अंक : 50 | इन्दौर, 7 अगस्त से 13 अगस्त 2019 | पेज : 4 | कीमत : 3 रुपये

वाराणसी के मंदिरों में चढ़ाए गये फूलों से बनेंगी अगरबत्तियां, पूरी दुनिया में बेची जाएंगी

वाराणसी। वाराणसी के काशी विश्वनाथ और अन्य मंदिरों में चढ़ाए जाने वाले भारी मात्रा में फूलों को अब गंगा नदी में नहीं डाला जाएगा. महिलाओं के सेल्फ-हेल्प समूहों द्वारा इन फूलों से अगरबत्ती बनाया जाएगा, जिसे आईटीसी पूरे विश्व में बेचेगा. अगरबत्ती के पैकेट पर काशी विश्वनाथ मंदिर की तस्वीर छपी रहेगी. परियोजना की शुरुआत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इस महीने से कर सकते हैं.

सूत्रों के अनुसार, काशी विश्वनाथ मंदिर में हर दिन 12 टन से अधिक फूल चढ़ाए जाते हैं. 'सावन' के महीने के दौरान यह मात्रा बढ़कर हर दिन 40 टन हो जाती है.

मंदिर के सीईओ विशाल सिंह का कहना है कि इस परियोजना से न केवल फूलों का उचित प्रयोग होगा, बल्कि महिलाओं को रोजगार मिलने के अवसर भी प्राप्त होंगे. उन्होंने कहा, 'इससे फूलों को नष्ट करने की समस्या का भी हल हो जाएगा. धार्मिक पवित्रता के कारण हम फूलों को यहां-वहां फेंक नहीं सकते हैं, ऐसे में यह उनका उपयोग करने का सबसे अच्छा तरीका है. अगरबत्ती की बिक्री पर मंदिर को रॉयल्टी का हिस्सा भी मिलेगा.'

दिलचस्प बात यह है कि, लखनऊ नगर निगम (एलएमसी) पहले से ही शहर के एक सामाजिक उद्यम के साथ मिलकर अगरबत्ती बनाने के लिए फूलों को एकत्र करने में जुट गया है. नगर आयुक्त इंद्रमणि त्रिपाठी का कहना है कि यह परियोजना एकत्रित फूलों के कचरे से अगरबत्ती और जैव खाद बनाने की है. इस पर वैज्ञानिक विशेषज्ञता पाने के लिए निगम वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) और सेंट्रल इंस्टीट्यूट फॉर मेडिसिनल एंड एरोमेटिक्स प्लांट्स (सीआईएमपी) के के साथ भी काम कर रहे हैं.

एलएमसी सूत्रों के अनुसार, एक क्विंटल ताजे फूलों से करीब 30 से 35 किलोग्राम अगरबत्तियां बनेंगी. एक सामाजिक उद्यम के संस्थापक हर्शित सोनकर इस परियोजना का नेतृत्व कर रहे हैं. उनका लक्ष्य एकत्रित किए गए फूलों के करीब 20 प्रतिशत फूलों से अगरबत्ती बनाने का है. इस परियोजना से 100 लोगों से भी अधिक को रोजगार मिलेगा।

पर्यावरण हमारा प्राकृतिक परिवेश है

पर्यावरण हमारा प्राकृतिक परिवेश है जो सभी जीवित प्रजातियों को पृथ्वी पर प्राकृतिक रूप से विकसित, पोषण और नष्ट करने में मदद करता है। पर्यावरण सभी जीवित प्रजातियों की वृद्धि और विकास को प्रभावित करता है। हमारा पर्यावरण हमें बहुत कुछ देता है और बदले में हमें अपने पर्यावरण की देखभाल और सुरक्षा करने की आवश्यकता है।

जैसे हम सभी एक आरामदायक जीवन के लिए अपने घरों को डिजाइन करते हैं और हमें अपने घर से बाहर कदम रखते समय आरामदायक और स्वस्थ जीवन जीने के लिए अपने पर्यावरण को डिजाइन करने और बनाए रखने की भी आवश्यकता होती है। जैसे हम सभी एक सुंदर घर के लिए सपने देखते हैं, हमारा देश एक सुंदर वातावरण के लिए सपने देखता है।

हमारे आसपास चारों और पर्यावरण है। यह हर उस चीज को संदर्भित करता है जो हमें घेरती है और प्रभावित करती है। हमारा पारिस्थितिकी तंत्र जीवित जीवों और गैर-जीवित घटकों जैसे हवा, पानी, मिट्टी और खनिजों का समुदाय है। पर्यावरण में वातावरण, वनस्पति, भूमि, मिट्टी, प्राकृतिक घटनाएं, वायु, जल, जलवायु और सभी प्राकृतिक संसाधन आदि शामिल हैं।

जीवित तत्व जैसे कि पशु, पक्षी, पौधे आदि जैविक कारक हैं जबकि अजैविक कारकों में जल, वायु, सूर्य का प्रकाश आदि शामिल हैं। जैविक और अजैविक कारक एक दूसरे से संपर्क करते हैं और प्रभावित करते हैं। पर्यावरण के चार क्षेत्र हैं वायुमंडल, बायोस्फीयर, हाइड्रोस्फियर और लिथोस्फीयर। प्राकृतिक पर्यावरण के अलावा, मानव निर्मित वातावरण है यानी उन क्षेत्रों में जहां आदमी ने शहरीकरण और कृषि उत्पादन, आदि के लिए व्यक्तिगत उपयोग के लिए भूमि को बदल दिया है।

पर्यावरण का मतलब उस परिवेश से है जिसमें हम सभी रहते हैं। इसमें ग्रह पृथ्वी पर जीवित और निर्जीव चीज़ों का हर रूप शामिल है। इन दिनों जो प्रमुख मुद्दा है, वह है पर्यावरण प्रदूषण। पर्यावरण में हानिकारक प्रदूषक पर्यावरण को दूषित करते हैं और जैविक और अजैविक कारकों पर कई हानिकारक प्रभाव डालते हैं। पर्यावरण प्रदूषण के प्रमुख प्रकारों में वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मिट्टी प्रदूषण आदि शामिल हैं।

आइये नीचे दिए गए पर्यावरण प्रदूषण पर एक नजर डालते हैं-

वायु प्रदूषणः वायु प्रदूषण वायुमंडल में प्रदूषकों, रसायनों और गैसों का उत्सर्जन है।

ध्वनि प्रदूषणः शोर प्रदूषण में मानव गतिविधियों, सार्वजनिक और निजी परिवहन जैसे कि विमान, आदि द्वारा निर्मित शोर शामिल है।

जल प्रदूषणः सतही जल में औद्योगिक, घरेलू और व्यावसायिक अपशिष्ट से अपशिष्ट जल के निर्वहन के कारण जल प्रदूषण होता है।

मृदा प्रदूषणः मृदा प्रदूषण औद्योगिक, कृषि और जीवित प्राणियों की अन्य गतिविधियों के कारण रसायनों की मिलावट के कारण होता है।

पर्यावरण प्रदूषण सीधे मनुष्य के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है क्योंकि हम इस वातावरण में सांस लेते हैं, खाते हैं, पीते हैं और रहते हैं। इस प्रकार, मानव को प्रदूषण और हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली गतिविधियों को प्रतिबंधित करने की आवश्यकता है।

पर्यावरण को खतरा : इंसानों की तबाही की शुरुआत

मानव के विकास के साथ-साथ पर्यावरण में प्रदूषण की मात्रा बढ़ती जा रही है। दिन-ब-दिन बढ़ता प्रदूषण इस समय संसार की सबसे बड़ी समस्या बना हुआ है। अगर पृथ्वी को मनुष्यों और अन्य प्रजातियों के लिए रहने की जगह बनाकर रखना चाहते हैं तो सबसे पहले पर्यावरण की समस्याओं का समाधान करना होगा। पर्यावरण के लिहाज से इंसान के सामने आ रही मुश्किलों पर...

वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन

पिछले कई दशकों से वायु प्रदूषण लगातार बढ़ता जा रहा है। वायु के प्रदुषित होने के साथ-साथ जल कार्बन से भर चुका है। वातावरण में मौजूद सीओ2 पराबैंगनी विकिरण को सोखने और छोड़ने का काम करती है, जिससे हवा गरम होती है और फिर जमीन और पानी भी गरम हो जाते हैं। अगर ऐसा न हो तो पृथ्वी पर हर तरफ बर्फ जम जाएगी, लेकिन वायु में अधिक मात्रा में कार्बन के होने से लोगों की सेहत पर बुरा असर पड़ रहा है। इसके अलावा वायु प्रदूषण से तापमान में हो रही वृद्धि का सीधा असर जलवायु पर पड़ रहा है।

जंगलों की कटाई

वातावरण और महासागर से कार्बन को सोखने में जंगलों की अहम भूमिका होती है। विभिन्न प्रजातियों के पौधों और जानवरों को आसरा देने वाले जंगल नष्ट होते जा रहे हैं। इन्हें काटकर पशुपालन, सोयाबीन, ताड़ और दूसरे किस्म की खेती के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। आज धरती का सिर्फ 30 फीसदी हिस्सा जंगलों से ढंका है, जो कि 11,000 साल पहले जब खेती शुरू की गई थी उसका ठीक आधा है। हर साल लगभग 73 लाख हेक्टेयर जंगल काटे जा रहे हैं।

प्रजातियों का लुप्त होना

जंगली जानवरों का उनके दांत, खाल और दूसरी चीजों के लिए शिकार किया जा रहा है, जिस वजह से कई जानवर विलुप्त होने की कगार पर पहुंच गए हैं। समुंद्रों से औधोगिक स्तर पर मछलियों को पकड़ने से जलीय जीवन का संतुलन भी गड़बड़ा गया है। धरती पर मौजूद हर पौधा और प्राणी किसी न किसी से जुड़ा हुआ है। कई प्रजातियों के विलुप्त होने से इस चेन की कड़िया टूट गई हैं। अगर ऐसे ही इस चेन की कड़ियां टूटती गई तो इंसान भी मुश्किल में आ जाएगा।

मिट्टी का दोहन

अत्यधिक चराई, एक जैसी खेती, भूमि-उपयोग रूपांतरण और जरूरत से ज्यादा खाद के इस्तेमाल की वजह से दुनिया भर में मिट्टी को नुकसान पहुंच रहा है। मिट्टी की क्वालिटी खराब होती जा रही है। यूएन के मुताबिक हर साल 1.2 करोड़ हेक्टयेर जमीन खराब होती जा रही है।

अधिक जनसंख्या

दुनियाभर में इंसान की आबादी तेजी से बढ़ती जा रही है। 20वीं शताब्दी के शुरू में दुनिया की आबादी 1.6 अरब थी, जो कि आज 7.5 अरब है। एक अनुमान के मुताबिक 2050 तक यह 10 अरब हो जाएगी। इतनी विशाल आबादी प्राकृतिक संसाधनों जैसे पानी पर भारी बोझ डाल रही है।

पर्यावरण, तापमान के कारण अकाल मृत्यु की ओर बढ़ती धरती

कोई भी पर्यावरण के बारे में कुछ भी पढ़ना और जानना नहीं चाहता है, क्योंकि यह उसके इंटरेस्ट की बात नहीं है, क्योंकि वह यह नहीं जानता है कि मेरे बच्चे मुझसे भी खतरनाक स्थिति में जीएंगे। अपनी को कट गई लेकिन कोई भी अपने बच्चों के बारे में नहीं सोचता है। सभी चाहते हैं पानी, लेकिन पानी बचाना कोई नहीं चाहता और पानी के लिए कोई किसी को जाग्रत नहीं करना चाहता। खैर, यहां ऐसी बाते बताई जाएगी जो संभवत- आप अभी नहीं जानते होंगे।

एक व्यक्ति की प्राकृतिक उम्र होती है 120 वर्ष, लेकिन उचित व उत्तम भोजन, स्वच्छ व निर्मल जल और प्रदूषण मुक्त वायु नहीं मिलने के कारण वह 70 के आसपास दुनिया को छोड़ रहा है। इस पर भी यदि उसकी जीवन शैली गलत है तो वह 50 से 60 के बीच मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। परंतु, एक और स्थिति है वह यह है कि देश में सिर्फ एक राज्य में ही सालाना अधिकतम 10 हजार लोग दुर्घाटना में मारे जा रहे हैं, अर्थात अकाल मृत्यु।

वैज्ञानिकों का कहना है कि हमारी धरती अपनी धुरी से 1 डिग्री तक खिसक गई है और ग्लोबल वार्मिंग शुरू हो चुकी है। अब जल्द ही इसके प्रति सामूहिक प्रयास नहीं किए तो %महाविनाश% के लिए तैयार रहें। लगातार मौसम बदलता जा रहा है। तापमान बढ़ रहा है। जलवायु परिवर्तन हो रहा है।

हिमालयी ग्लेशियरों को लेकर संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम ने एक अध्ययन कराया था। इस अध्ययन ने साफतौर पर चेतावनी दी थी कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण हिमालय क्षेत्र की 15,000 हिमनद (ग्लेशियर) और 9,000 हिमताल (ग्लेशियर लेक) में आधे वर्ष 2050 और अधिकतर वर्ष 2100 तक समाप्त हो जाएंगे। इस बात की पुष्टि भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने भी की है।

यह क्यों हो रहा है? वैज्ञानिक कहते हैं कि वायु प्रदूषण (ग्रीन हाउस गैसों) के कारण यह सब हो रहा है। प्रदूषण कई तरह का होता है। हमारे वाहनों से निकलने वाला धुंआ, कोयले के प्लांट से निकलने वाला धुआं, कारखनों से निकलने वाला धुआं और अन्य कई कारणों से धरती के वातावरण में कार्बन डाई-आकसाइड की मात्रा बढ़ती जा रही है जिसके चलते धरती का तापमान लगभग एक डिग्री से ज्यादा बढ़ गया है और ऑक्सिजन की मात्रा कम होती जा रही है। अब तो गर्मी में एशिया के अधिक शहरों का अधिकतम तापमान 50 डीग्री रहने लगा है। पहले 100 या 200 साल के बीच में अगर तापमान में एक सेल्सियस की बढ़ोतरी हो जाती थी तो उसे ग्लोबल वॉर्मिंग की श्रेणी में रखा जाता था। लेकिन पिछले 100 साल में अब तक 0.4 सेल्सियस की बढ़ोतरी हो चुकी है जो बहुत खतरनाक है। हालांकि ग्लोबल वार्मिंग एक वृहत्तर विषय है लेकिन यहां इतना समझने से ही समझ में आ जाता है कि मुख?य कारण क्या है। प्राकृतिक तौर पर पृथ्वी की जलवायु को एक डिग्री ठंडा या गर्म होने के लिए हजारों साल लग सकते हैं। हिम-युग चक्र में पृथ्वी की जलावायु में जो बदलाव होते हैं वो ज्वालामुखी गतिविधि के कारण होती है जैसे वन जीवन में बदलाव, सूर्य के रेडियेशन में बदलाव तथा और प्राकृतिक परिवर्तन, ये सब कुदरत का जलवायु चक्र है, लेकिन पिछले सालों में मानव की गतिविधियां अधिक बढ़ने के कारण यह परिवर्तन देखने को मिला है जो कि मानव अस्तित्व के लिए खतरनाक है।

इस ग्लोबल वार्मिंग के कारण एक ओर जहां पीने के पानी का संकट गहराएगा वहीं मौसम में तेजी से बदलावा होगा और तापमान बढ़ने से ठंड के दिनों में भी गर्मी लेगेगी। ऐसे में यह सोचा जा सकता है कि यह कितना खतरनाक होगा।

खनन, उत्खनन या खुदाई का अर्थ है धरती के शरीर पर फावड़ा चलाना, उसके शरीर को छलनी करना। खनन वैध हो या अवैश वह खनन तो खनन ही है। खनन पांच जगहों पर हो रहा है- 1.नदी के पास खनन, 2.पहाड़ की कटाई, 3.खनीज, धतु, हीरा क्षेत्रों में खनन, 4.समुद्री इलाकों में खनन और 5.पानी के लिए धरती के हर क्षेत्र में किए जा रहा बोरिंग। रेत, गिट्टी, खनीज पदार्थों, हीरा, कोयला, तेल, पेट्रोल, धातु और पानी के लिए संपूर्ण धरती को खोद दिया गया है। कहीं हजार फीट तो कहीं पांच हजार फीट नीचे से पानी निकाला जा रहा है। मनुष?य उपरी जल को छोड़कर धरती के भीतरी जल को तेजी से पीकर जल स्तर को कम करता जा रहा है जिसके चलते भूमि तेजी से बहुत नीचे तक खोखली हो रही है। खोखली भूमि भविष्य में जब तेजी से दरकने लगेगी तब मानव के लिए इस स्थिति को रोकना मुश्किल हो जाएगा। वर्तमान में धीरे धीरे समुद्र के तटवर्ती शहर जमिदोष होते जा रहे हैं। समुद्र का जल स्तर बढ़ता जा रहा है। यह बात सिर्फ समुद्र के तटवर्ती शहरों पर लागू नहीं होती।

क्या मानव सभ्यता महाविनाश की ओर बढ़ रही है?

1980 के दशक की शुरुआत में भारत में गिद्धों की संख्या लगभग 4 करोड़ थी, जो 2017 के अंत तक घटकर केवल 19,000 रह गयी है. ये जानकारी केंद्रीय पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने संसद में पिछले दिनों दी. गिद्ध तो न हमारे देश में खाया जाता है न ही इसका शिकार किया जाता है. फिर इतने सारे गिद्ध कहां गए? जानकारों का मानना है कि ऐसा डिक्लोफेनाक नामक दवा के कारण हुआ. यह दवा नब्बे के दशक के शुरुआती सालों में गाय, बैल, भैंसों आदि को सूजन, बुखार, घावों से जुड़े दर्द के उपचार के लिए दी जाती थी. जब गिद्ध ऐसे जानवरों के अवशेषों को खाते, जिसे डिक्लोफेनाक दिया गया हो, तो उनके मांस से होते हुए ये दवा गिद्धों के शरीर में पहुंच जाती और इस वजह से उनकी मौत हो जाती.

गिद्ध एक नायब जीव है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र को स्वस्थ रखने और बीमारी के प्रसार को रोकने में मदद मिलती है. वे प्राकृतिक स्कैवेंजर हैं. जब भारत में गिद्धों की आबादी कम हुई तो केवल 11 वर्षों में ही आवारा कुत्तों की आबादी 70 लाख से बढ़कर 2.9 करोड़ हो गयी तथा कुत्तों के काटने के मामले बढ़ गए. भारत में रेबीज से मरने वालों की संख्या 20,000 तक हो गई है. दुनिया में रेबीज से मरने वालों में एक-तिहाई लोग भारत के हैं. उक्त उदाहरण मैंने पर्यावरण से छेड़छाड़ के नतीजों को समझाने के लिए दिया है.

हाल ही में दिल्ली के सर गंगा राम हॉस्पिटल के डाक्टरों ने जहरीली हवा से 28 वर्षीय युवती में फेफड़ों का कैंसर होने का दावा किया है. यह देश का पहला ऐसा मामला है. डॉक्टरों का मानना है कि चूंकि युवती या उसके परिवार के किसी भी सदस्य के धूम्रपान करने का रिकॉर्ड नहीं मिला है. इसलिए यह मामला वायु प्रदूषण के कारण कैंसर का है.

हम लोगों को हैरान होने की जरूरत नहीं है. ये दिन तो आना ही था. विश्व स्वास्थ्य संगठन तो हमें बहुत पहले से सावधान करता आ रहा है. उसकी एक रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया की लगभग 90 प्रतिशत आबादी प्रदूषण के खतरनाक स्तर के बीच रह रही है. दुनिया के 15 सबसे प्रदूषित शहरों में से 14 भारत में हैं. बोस्टन (अमेरिका) स्थित स्वास्थ्य प्रभाव संस्थान द्वारा जारी स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर रिपोर्ट 2019 के अनुसार, वायु प्रदूषण से उत्पन्न बीमारियों के कारण 2017 में भारत में 12 लाख भारतीयों की मृत्यु हुई.

ऐसा भी नहीं है की हम नहीं जानते कि वायु प्रदूषण किन कारणों से है और उसे कैसे रोका जाए. वायु प्रदूषण के मुख्य स्रोतों की अच्छी तरह से पहचान की जा चुकी है और यह सूची सभी भारतीय शहरों के लिए आम है. वाहनों से निकलने वाला धुआं और गैस, बिजली उत्पादन सहित भारी उद्योग, ईंट भट्टों सहित कोयले का इस्तेमाल करने वाले लघु उद्योग, वाहनों की आवाजाही और निर्माण गतिविधियों के कारण सड़कों पर उड़ने वाली धूल, खुले में कचरा जलाना, खाना पकाने, प्रकाश व्यवस्था और हीटिंग के लिए विभिन्न ईंधनों का दहन, डीजल जनरेटर सेट, जंगल की आग इत्यादि. लेकिन हम अपने आर्थिक फायदे के लिए इतने अंधे हो चुके हैं कि प्रदूषण और प्रकारांतर में खुद को नुकसान पहुंचाने से बाज़ नहीं आते.

पर्यावरण के प्रति उदासीन रवैया बहुत ही खतरनाक रूप ले चुका है. आज हमारे महानगरों की हवा और नदियों का पानी जहरीला हो चुका है. भारत की अधिकांश नदियां, विशेष रूप से छोटी नदियां आज जहरीली नालियों बन चुकी है. ज्यादातर नदियों का पानी पीने लायक नहीं रहा है. इसका जिम्मेदार कोई और नहीं बल्कि हम स्वयं और हमारी व्यवस्थाएं हैं. अधिक लाभ के लिए फसलों में हम इतना कीटनाशक डालते हैं कि खाद्य पदार्थ भी जहरीले हो गए हैं. भूजल पीने के पानी का एक अति महत्वपूर्ण स्रोत है, लेकिन वह बुरी तरह प्रदूषित हो चुका है. इसका अधिकांश हिस्सा बिना किसी उपचार के ही पीने के काम आ रहा है. प्रदूषित पानी पीने से हमारे देश में 2018 में प्रतिदिन 7 लोगों की जान गयी तथा करीब 36,000 लोग प्रतिदिन पानी से होने वाली बीमारियों से पीड़ित हुए.

भारत धीरे-धीरे ही सही, लेकिन पर्यावरणीय आपदा की ओर बढ़ रहा है. इसके मूल में है विनाशकारी मानवीय गतिविधियां. देश में होने वाली ज्यादातर प्राकृतिक आपदाओं की जड़ में आप मानव लोभ ही पाएंगे. उदाहरण के लिए जून 2013 में आई उत्तराखंड की बाढ़ को ले लीजिए, जहां करीब 5,000 लोगों की जान गयी थी. इसके बारे में कुछ लोग कहेंगे कि यह बादल फटने की प्राकृतिक आपदा थी, मनुष्य के वश से बाहर. परन्तु पर्यावरणवादी तथा वैज्ञानिक आपको बताएंगे कि अवैध उत्खनन, वनों की कटाई, पहाड़ियों को काटने और नदी के तल पर अवैध निर्माण- सभी ने मिलकर प्रकृति के रोष को बढ़ाया. इसकी वजह से जो तांडव हुआ वह सारी दुनिया ने देखा.

अनौपचारिक आंकड़ों के अनुसार, वर्तमान दशक में देश में बाढ़ से लगभग 8,000 लोग मारे जा चुके है. इन दिनों असम में बाढ़ का प्रकोप जारी है. सितम्बर 2014 में श्रीनगर में बाढ़ के कारण तक़रीबन 300 लोगो की जान गयी थी. दिसंबर 2015 में तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में बाढ़ आयी थी, जिसमें 500 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई तथा करीब 15 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हुए.

वन, पर्यावरण और जलवायु के संरक्षण से ही देश व दुनिया में खुशियाली संभव

सुपौल। वन, पर्यावरण, और जलवायु का संरक्षण कर ही देश में खुशियाली का संचार संभव है. यह बातें राज्य सरकार के उर्जा मंत्री विजेंद्र प्रसाद यादव ने बीएसएस कॉलेज परिसर में आयोजित 70वां वन महोत्सव सह स्मृति वाटिका उद?घाटन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही.

कार्यक्रम का दीप प्रज्जवलित कर उद?घाटन करने के बाद मंत्री श्री यादव ने अपने संबोधन में देश और दुनिया में बढ़ रही ग्लोबल वार्मिंग पर गहरी चिंता व्यक्त की. उन्होंने कहा कि पृथ्वी और इन्सानियत की हिफाजत के लिये प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम एक पौधा लगाने का संकल्प लेना चाहिये.

वनों की सुरक्षा कर ही देश को हरियाली वाला देश बनाया जा सकता है. यही वजह है कि पर्यावरण के सुरक्षा हेतु केंद्र और राज्य सरकार द्वारा इस दिशा में युद्ध स्तर पर काम किया जा रहा है. राज्य सरकार की ओर से मनरेगा योजना के तहत भी पौधरोपण किया जा रहा है. इसके लिये सभी जिलों को लक्ष्य के अनुरूप पौधरोपण का निर्देश दिया गया है.

कार्यक्रम को संबोधित करते निर्मली विधायक अनिरूद्ध प्रसाद यादव ने भी पर्यावरण की सुरक्षा पर प्रकाश डाला. उन्होंने वनों के हो रहे ह्रास एवं बढ़ते प्रदूषण के लिये सभी को जिम्मेदार बताया. साथ ही जागरूक होने की बात कही. विधायक ने सभी लोगों से पेड़ लगाने की अपील की. जिला पदाधिकारी महेंद्र कुमार ने कहा कि पर्यावरण की रक्षा हेतु जागरूकता जरूरी है. राज्य स्तर पर इस दिशा में वृहत प्रयास किये जा रहे हैं.

उन्होंने स्कूल, कॉलेज में भी जागरूकता कार्यक्रम चलाने की बात कही. साथ ही वन संरक्षण और पर्यावरण की सुरक्षा को जन अभियान बना कर सफल बनाने का आह्वान किया. पुलिस अधीक्षक मृत्युंजय कुमार चौधरी ने विद्यालय स्तर पर हर छात्र को एक वृक्ष से जोड़ने की बात कही. कहा कि कोसी प्रभावित क्षेत्र में वृक्ष लगाने से बाढ़ आपदा से भी बचाव होगा.

पर्यावरण बचाने में अहम हैं गाय के गोबर से बने उत्पाद

भरतपुर। शहर में इन दिनों गोबर से बने उत्पादों का क्रेज बढ़ने लगा है। गोबर से निर्मित की-रिंग, स्वास्तिक, लक्ष्मी गणेश आदि भी लोगों के आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। शहर में इस नई तकनीक को लाने वाले विजय ओझा गोबर से विभिन्न उत्पादों का निर्माण कर पर्यावरण संरक्षण की मुहिम को आगे बढ़ा रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए विज्ञान के साथ धर्म को जोड़कर देखने वाले विजय ओझा बताते हैं उन्हें इस कार्य के लिए अपने गुरू मलूक पीठ के पीठाधीश्वर राजेन्द्र दास जी की प्रेरणा से इस कार्य को आगे बढ़ाया। भास्कर से बातचीत में ओझा ने बताया कि वह गाय के गोबर को एकत्रित कर उससे कई प्रकार की वस्तुएं बना रहे हैं जो पर्यावरण को भी नुकसान नहीं पहुंचाती साथ ही हमारी धार्मिक भावनाओं के हिसाब से भी उचित हैं। ओझा ने बताया भारतीय देशी निराश्रित गोवंश के गोबर में कम से कम छः पौधो के बीज भी रखे गये है यदि आप गोबर गणेश की स्थापना करके बाद में जल में विसर्जन करेंगे तथा उस जल को गमले में डालेंगे तो कुछ दिन में उसमे एक पौधा निकलेगा जो की गणेश जी का ही प्रतिरूप है इससे पर्यावरण सुरक्षित होगा तथा जो गोबर गणेश आप खरीदेंगे उससे निराश्रित गोवंश का भी भोजन तैयार होगा।

पेड़ों की अवैध कटाई बनी कलंक

रूपनगर। खैर के पेड़ों की अवैध कटाई जोरों पर जारी है। महंगी लकड़ी को अवैध रूप से काटकर पाने वाले पुलिस और वन विभाग की नजर से बच जाते हैं और नुकसान पर्यावरण को हो रहा है। जिले में अवैध खनन की तरह अवैध कटाई भी कलंक बन चुकी है। अवैध रूप से जंगलों की कटाई करने वाले चोरी करने के इतने आदी हो चुके हैं कि वह अपने चंद रुपयों की लालच में पर्यावरण का पतन करने से भी गुरेज नहीं करते और उन्हें कानून के दांव पेंच भी बड़ी अच्छी तरह से आते हैं। जब भी लड़की की कटाई के बारे में वन विभाग को पता चलता है तब तक पेड़ कट चुके होते हैं और चोर फुर्र हो चुके होते है। वन विभाग और पुलिस की सुस्त की वजह से चोरों की तालाश लंबे समय तक तजारी रहती है। हाल ही में चमकौर साहिब और पुरखाली के इलाके में अवैध रूप से खैर की कटाई के मामले सामने आए। उन मामलों में भी पहले की तरह विभाग और पुलिस की कार्रवाई बेहद धीमी ही रही। मामलों में पेड़ों की कटाई हो गई और विभाग ने काटी गई खैर बरामद कर ली लेकिन अवैध कटान

करने वाले लोग गिरफ्त से अभी भी दूर हैं। वन विभाग के कुछेक अधिकारी न छापने की शर्त पर कहते हैं कि जो चोर आदतन कटाई का काला कारोबार करते हैं और पेड़ों की कटाई करके पर्यावरण और विभाग को नुकसान पहुंचाते हैं, उनको अंत में सख्त सजा मिलनी ही है। इसके लिए विभाग सख्त है और सजग है। चोर भागने में हो जाते हैं सफल पुरखाली के हरनामपुरा में काटे गए 20 खैर के पेड़ों की लकड़ी वन विभाग ने पुरखाली के हरबंस सिंह के घर से बरामद करने का दावा किया था। इस मामले में विभाग व पुलिस ने एक आरोपित की गिरफ्तारी भी की थी लेकिन मामला खुलकर सामने नहीं आया। इसी तरह चमकौर साहिब इलाके में एक सफारी गाड़ी में खैर के मोछे बरामद किए गए थे जबकि मौके से खैर चोर भागने में सफल हो गए थे और पुलिस की तालाश जारी है।

रूपनगर के डीएफओ अमित चौहान ने कहा कि हरेक इलाके में पक्के बेलदारों और वन गार्डो की डयूटी है। अगर कहीं कोई चोरी करने में सफल हो भी जाता है तो उसे पकड़ लिया जाता है। अवैध रूप से कटाई की इजाजत किसी को भी नहीं है। विभाग का काम है वनों की रक्षा करना और विभाग इसे बखूबी निभा रहा है। लकड़ी चोरों को पकड़ने और उन पर पुलिस कार्रवाई करवाने के लिए विभाग किसी बात को लेकर समझौता नहीं करता।

अब परिषदीय स्कूलों में होगा किचन गार्डेन, पर्यावरण को रख सकेंगे हरा-भरा

प्रयागराज। कांवेंट स्कूलों की तर्ज पर परिषदीय स्कूलों में भी पठन-पाठन को बढ़ावा देने को लेकर शासन गंभीर है। कई प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों को भी अंग्रेजी माध्यम में परिवर्तित किया जा चुका है। अब परिषदीय स्कूलों में किचन गार्डेन का कांसेप्ट भी आ गया है। पर्याप्त जगह वाले विद्यालयों में किचन गार्डेन को विकसित करने के निर्देश राज्य परियोजना निदेशक (समग्र शिक्षा) विजय किरन आनंद ने जारी किए हैं।

दरअसल, मिडडे मील (एमडीएम)के चार्ट (मेन्यू) में अलग-अलग दिन का व्यंजन निर्धारित है। इसमें कई दिन सब्जियां भी शामिल हैं। ऐसे में जिन विद्यालयों में पर्याप्त जगह है, उसमें आसानी से उगाई जा सकने वाली मौसमी सब्जियों (धनिया, लहसुन, नेनुआ, तरोई, टमाटर, गोभी, लौकी, हरी मिर्च आदि) के उत्पादन के लिए किचन गार्डेन विकसित करने के निर्देश हैं। किचन गार्डेन विकसित करने का मकसद यह है कि पर्यावरण को हरा-भरा रखने के लिहाज से ग्रीनरी रहेगी, खाली स्थान का सदुपयोग हो सकेगा। यही नहीं आसानी से परिसर में ही हरी सब्जियां उपलब्ध हो जाएंगी। इससे जो सब्जियां बाजार से खरीदनी पड़ती हैं, उससे निजात मिल जाएगा। स्कूल परिसर से निकलने वाले कचरे और गंदगी को बड़े गड्ढे में डालकर कंपोस्ट भी तैयार किया जाएगा, जिसका इस्तेमाल किचन गार्डेन में जैविक खाद के रूप में किया जाएगा।

बढ़ती जनसंख्या, वनों की कटाई और प्लास्टिक से पर्यावरण हो रहा प्रदूषित, इसलिए पौधे जरूरी- दीपक

रतनपुर। पावर ग्रिड भरारी एवं एलआईसी रतनपुर की ओर से पर्यावरण संरक्षण के लिए धार्मिक एवं पर्यटन नगरी रतनपुर के विभिन्न क्षेत्रों मे सघन पौधारोपण कर उसके संरक्षण का संकल्प लिया।

रतनपुर नगर में प्लांटेशन के अन्तर्गत जुनाशहर वार्ड स्थित हजरत बाबा सैय्यद मूसा शहीद मजार शरीफ, पुराना बस स्टैंड स्थित प्राचीन हाथी किला एवं यज्ञ स्थल स्थित राम टेकरी मंदिर रतनपुर में पौधारोपण कार्यक्रम के तहत पौधारोपण किया गया। पौधरोपण करने के बाद पावर ग्रिड के प्रबंधक दीपक कुमार ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि बढ़ती जनसंख्या एवं वनों की अंधाधुंध बेतरतीब कटाई तथा प्लास्टिक के उपयोग से पर्यावरण निरंतर प्रदूषित हो रहा है। इसलिए जिस तरह हम अपनी देख भाल करते हैं। उसी तरह हमें पर्यावरण को संतुलित रखने पेड़ पौधे लगाकर उसे गोद लेकर संरक्षित करने की आवश्यकता है। पावर ग्रिड के उप प्रबंधक दानेश्वर मेरिया ने कहा कि पेड़ पौधों के अभाव में बारिश भी कम हो रहा है जिसके कारण जमीनों का भू-जल स्तर तेजी से नीचे जा रहा है। ऐसे में हम दिन प्रतिदिन गर्मी के दिनों में पानी की कमी एवं समस्या से परेशान हो रहे है। इ इस अवसर पर पावर ग्रिड भरारी के प्रबंधक दीपक कुमार, उप प्रबंधक दानेश्वर मेरिया, जेई सुनील साहू, चंद्रशेखर देवांगन, टेक्नीशियन रूपचंद्र दोलाई, कृष्ण स्वाइन, डिप्लोमा ट्रेनी रविंद्र यादव, जलेश्वर, प्रवीण, राजेन्द्र सहित वित्तीय सलाहकार एलआईसी शेख वली उल्लाह सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008